अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : छठी – जैन धर्म विशारद (परीक्षा 21 जुलाई, 2019)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	10	24	36	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) 'अच्छंदा' शब्द का अर्थ है-

(क) स्वाधीन (ख) पराधीन

(ग) त्यागी (घ) भोगी ( )

(b) दुर्गति में गिरते हुए जीव को बचाने वाला है-

(क) श्रुत चारित्र धर्म (ख) भवनपति देवता

(ग) वैमानिक देवता (घ) इनमें से कोई नहीं ( )

(c) एवंता मुनि ने मुक्ति प्राप्त की-

(क) क्षमा से (ख) आत्म ध्यान से

(ग) कनकावली तप से (घ) गुणरत्न संवत्सर तप से ( )

(d) स्थलचर कौनसी नरक तक जा सकता है-

(क) छठी (ख) सातवीं

(ग) पाँचवीं (घ) चौथी ( )

(e) युगलिक मनुष्य आयुष्य पूर्ण कर किस गति में उत्पन्न होते हैं-

(क) नरक गति में (ख) देव गति में

(ग) तिर्यंच में (घ) इनमें से कोई नहीं ( )

(f) पहली नारकी की आगति है-

(क) 40 (ख) 16

(ग) 25 (घ) 30 ( )

(g) भगवान ऋषभदेव का महातेज किन दोषों से रहित है-

(क) सूर्य शाम अस्त होने से (ख) बादल ढक लेने वाले दोष से

(ग) राहु ग्रस लेने वाले दोष से (घ) इन सभी दोषों से ( )

(h) 'देव दुन्दुभि' नामक प्रतिहार्य है-

(क) चतुर्थ (ख) पंचम

(ग) तृतीय (घ) द्वितीय ( )

(i) उल्कापात में कितने प्रहर का अस्वाध्याय काल होता है-

(क) 4 प्रहर का (ख) 3 प्रहर का

(ग) 2 प्रहर का (घ) 1 प्रहर का ( )

(j) असन्नी मनुष्य की आगति है-

(क) 179 (ख) 171

(ग) 371 (घ) 48 ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1=(10)**

(a) मनुष्य की इच्छा आकाश के समान अनन्त है। ( )

(b) तीसरा तप 'कनकावली' है। ( )

(c) गज सुकुमाल बाल ब्रह्मचारी थे। ( )

(d) पाँचवीं नरक की आगति 16 की है। ( )

(e) नरक एवं देवगति से आयुष्य पूर्ण करके जीव पुनः नरक एवं देवगति में उत्पन्न नहीं होते हैं। ( )

(f) तेउकाय, वायुकाय से निकला हुआ जीव आगामी एक भव में सम्यक्त्व प्राप्त नहीं कर सकता। ( )

(g) भगवान में गुण और दोष दोनों होते हैं। ( )

(h) 'चामर' तीसरा प्रतिहार्य है। ( )

(i) रात्रि भोजन आश्रव का कारण है। ( )

(j) चन्द्रग्रहण में कम से कम आठ और अधिक से अधिक बारह प्रहर तक अस्वाध्याय माना जाता है। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1=(10)**

(a)	पिट्ठी	(क) परम पुरुष	.....
(b)	निहुओ	(ख) शुद्धि	.....
(c)	सोही	(ग) मार्दव से	.....
(d)	मद्दवया	(घ) पीठ	.....
(e)	देवकुरु उत्तर के युगलिक	(च) एकाग्र मन से	.....
(f)	दूसरी नरक की आगति	(छ) 285	.....
(g)	गर्भज की आगति	(ज) रात्रि भोजन त्याग	.....
(h)	परमं पुमांस	(झ) संसार समुद्र को सुखाने वाला	.....
(i)	भवोदधि शोषणाय	(य) 20	.....
(j)	जैनियों की पहचान	(र) पहले किल्विषिक तक	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a) मुझमें उसी जन्म में सिद्ध गति प्राप्त करने वाले उत्तम श्रमणों का वर्णन है।.....

(b) मैं प्रीति को नष्ट करता हूँ। .....

(c) मेरे उपदेश से रथनेमि का मन पुनः संयम में स्थिर हो गया। .....

(d) मैने संथारा लिए बिना ही सिद्ध बुद्ध मुक्त का पद प्राप्त किया। .....

(e) मेरा आचरण करके जीव कर्मों की स्थिति बढाता है। .....

(f) मेरी आगति 40 की है। .....

(g) मुझमें उत्पन्न सभी भव्य जीव अवश्य मोक्ष में जाते हैं। .....

(h) मेरी आगति 18 की है। .....

(i) मैं एक ऐसा प्रतिहार्य हूँ जो भगवान के धर्मराज होने की सर्वत्र घोषणा करता हूँ। .....

(j) मेरा त्याग करने से मनोबल, आत्मबल बढ़ता है, अनेक रोगों से छुटकारा मिलता है व स्वास्थ्य ठीक रहता है। .....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिएः - **12x2=(24)**

(a) किसको देवता नमस्कार करते हैं ?

.....

.....

.....

(b) काम भोगों को किनके समान बताया गया है ?

.....

.....

.....

(c) मुक्तावली तप कैसे किया जाता है ?

.....

.....

.....

(d) अहो भगवन्! जीवों का भव सिद्धिपना स्वभाव से है या परिणाम से ?

.....

.....

.....

(e) अहो भगवन्! जीव के भारी होने का क्या कारण है ?

.....

.....

.....

(f) **छठी-सातवीं नारकी के जीव आयुष्य पूर्ण कर किसमें उत्पन्न होते हैं ?**

.....

.....

.....

(g) **30 अकर्मभूमिज सन्नी मनुष्य की आगति लिखिए।**

.....

.....

.....

(h) **केवली की आगति तथा गति लिखिए।**

.....

.....

.....

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(i) **क्रोधाग्नि**.....

.....

.....**काटा गया हूँ हे प्रभो।।**

(j) **रत्न त्रयी**.....

.....

.....**भ्रमण मैने किया।।**

(k) **रजोद्घात किसे कहते हैं ?**

.....

.....

.....

(l) **अनुयोग द्वार सूत्र के अनुसार आगम के प्रकार लिखते हुए अंतिम प्रकार का अर्थ भी लिखिए।**

.....

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **12x3 = (36)**

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(a) **संसार**.....

.....

.....

.....

.....

..... **अपनी हँसी।।**

(b) **माता पिता**.....

.....

.....

.....

.....

. ..... **प्रीति से।।**

(c) **वयं च**.....

.....

.....

.....

.....

.....**साहुणो।।**

(d) **आयावयाहि**.....

.....

.....

.....

.....

..... **संपराए।।**

(e) **खणमेत्तसोक्खा**.....

.....

.....

.....

.....

..... **काम भोगा।।**

(f) **जो सहस्सं**.....

.....

.....

.....

.....

..... **परमो जओ।।**

(g) **अहं च**.....

.....

.....

.....

.....

..... **भविस्ससि।।**

(h) **मन्ये**.....

.....

.....

.....

.....

..... **भवान्तरेऽपि।।**

(i) **अहो भगवन्! श्रोत्रेन्दिय के वश में हुआ जीव कैसे कर्म बाँधता है ?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(j) **सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के भुजपरिसर्प, खेचर, स्थलचर, उरपरिसर्प, जलचर कौन-कौनसी नरक तक उत्पन्न हो सकते हैं ?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(k) **तीर्थंकर की आगति व गति लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(l) **रात्रि भोजन राक्षसी प्रवृत्ति है। कैसे ? समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....